श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 57, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शुक्रवार, 2 अक्टूबर, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

प्रदेश के अटल आवासीय विद्यालयों में अनाथ बच्चे भी करेंगे पढ़ाई : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अटल आवासीय विद्यालयों की डिजाइन का प्रस्तुतिकरण देखा

लखनऊ जेएनएन। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को अटल आवासीय विद्यालयों की डिजाइन का प्रस्तुतिकरण देखने के बाद इन विद्यालयों और छात्रावास के भवनों का आर्किटेक्चर भारतीय दर्शन व संस्कृति के अनुरूप बनाने को कहा। उन्होंने कहा कि इनमें अटल व अन्य महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्व की झलक भी दिखाई दे।

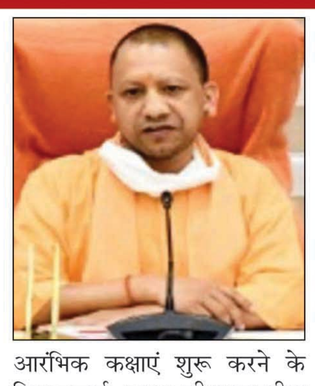

उत्तर प्रदेश के सभी 18 मंडलों में श्रमिकों के बच्चों के लिए बनाए जा रहे अटल आवासीय विद्यालयों में अनाथ बच्चे भी पढ़ाई करेंगे। उनके प्रवेश और शिक्षा की व्यवस्था करने के निर्देश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दिए हैं। आरंभिक कक्षाएं शुरू करने के लिए जुलाई, 2021 की समय सीमा निर्धारित की गई है। सीएम योगी ने कहा कि अटल आवासीय विद्यालय भवन में श्रमिकों की संतानों और अनाथ बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्थाएं की जाएं, जिससे बच्चों की योग्यता, क्षमता और कौशल का मूल्यांकन करते हुए उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा दी जा सके। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को अपने सरकारी आवास पर अटल आवासीय विद्यालयों की डिजाइन का प्रस्तुतिकरण देखने के बाद इन विद्यालयों और छात्रावास के भवनों का आर्किटेक्चर भारतीय दर्शन व संस्कृति के अनुरूप बनाने को कहा। उन्होंने कहा कि इनमें अटल व अन्य महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्व की झलक भी दिखाई दे। इसकी शैली उत्कृष्ट और जीवंत हो और निर्माण में आधुनिक तकनीक, डिजाइन व सुविधाओं का समावेश किया जाए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विद्यालय भवन में श्रमिकों की संतानों और अनाथ बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवस्थाएं की जाएं, जिससे बच्चों की योग्यता, क्षमता और कौशल का मूल्यांकन करते हुए उनकी रुचि के अनुसार शिक्षा दी जा सके।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बताया कि प्रदेश के सभी 18 मंडलों में अटल आवासीय विद्यालय बनाए जा रहे हैं। यह विद्यालय नवोदय विद्यालयों की तर्ज पर संचालित किए जाएंगे। इन आवासीय विद्यालयों में पंजीकृत श्रमिकों के बच्चों सहित निराश्रित और अनाथ बच्चों को निश्शुल्क शिक्षा, आवास, भोजन आदि की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। बच्चों को उनकी रुचि के अनुरूप शिक्षित कर स्वावलंबी और योग्य नागरिक बनाया जाएगा। इस अवसर पर श्रम मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य, अपर मुख्य सचिव श्रम सुरेश चंद्रा, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री एसपी गोयल, प्रमुख सचिव लोक निर्माण नितिन रमेश गोकर्ण, सचिव मुख्यमंत्री आलोक कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

भारत पहुंचा प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति का 'अभेद्य किला' Air India One

नई दिल्ली, एएनआइ। भारत के वीवीआइपी बेड़े के लिए एयर इंडिया वन का हो रहा इंतजार अब खत्म हो गया है। समाचार एजेंसी एएनआइ ने जानकारी दी है कि एयर इंडिया वन दिल्ली इंटरनेशल हवाई अड्डे पर पहुंच गया है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के लिए दो वीवीआईपी एयर इंडिया वन विमानों में से पहला विमान गुरुवार को भारत पहुंचा है। भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के लिए खरीदे गए दो बोइंग-777 विमान तैयार हैं। भारत को मिलने वाले इन दो नए विमानों का इस्तेमाल प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति की उड़ान के लिए किया जाएगा, जिसे वायु सेना के पायलट उड़ाएंगे। सरकारी सूत्रों ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया है कि एयर इंडिया वन अग्रिम और सुरक्षित संचार प्रणाली से लैस है जो हैक किए गए या टैप किए बिना मध्य-हवा में ऑडियो और वीडियो संचार फंक्शन का लाभ उठा सकता है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के लिए नए डिजाइन किए गए वीआईपी विमान अमेरिका से आ गए हैं। इन दोनों विमानों को भारतीय वायुसेना के पायलट ऑपरेट करेंगे। हालांकि, इन दोनों नए विमानों का मेंटेनेंस एयर इंडिया इंजीनियरिंग सर्विसेज लिमिटेड द्वारा किया जाएगा। इन वीवीआईपी विमानों की आपूर्ति पहले जुलाई में होनी थी लेकिन कोरोना महामारी के कारण नहीं हो पाई। फिलहाल देश में प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और उप राष्ट्रपति एयर इंडिया के इ747 विमान से यात्रा करते हैं। प्रधानमंत्री और अन्य वीवीआइपी लोगों द्वारा इस्तेमाल होने वाले इन विमानों को एयर इंडिया वन कहा जाता है। अधिकारियों ने बताया कि इससे पहले पीएम समेत वीवीआइपी लोगों के इस्तेमाल में लगे इ747 विमानों का इस्तेमाल वाणिज्यिक परिचालन के लिए किया जाएगा। दोनों इ-777 विमानों का इस्तेमाल देश के वीवीआइपी लोगों की यात्रा के लिए किया जाएगा। यह दोनों विमान साल 2018 में कुछ समय के लिए एयर इंडिया के वाणिज्यिक विमानों के बेड़े में शामिल थे। इसके बाद इन दोनों विमानों को कस्टमाइज करने के लिए वापस बोइंग को भेज दियागया था। दोनों इ777 विमान स्टेट-ऑफ-द-आर्ट मिसाइल डिफेंस सिस्टम्स से लैस होंगे। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति के लिए बनाया गया ये खास विमान कई खूबियों से लैस है। इसमे मिसाइल एप्रोच वार्निंग सिस्टम लगाया गया है, जिसमें लगे सेंसर की मदद से पायलट को मिसाइलों पर हमला करने में मदद मिलती है। इसके अलावा विमान में इलेक्ट्रोनिक वॉरफेयर जैमर लगा होता है, जिससे दुश्मन के जीपीएस और ड्रोन सिग्नल को ब्लॉक करने में मदद मिलती है। एयर इंडिया वन विमान में डायरेक्शनल इंफ्रारेड काउंटरमेजर सिस्टम लगा होता है, यह एक मिसाइल रोधी सिस्टम है, जो विमान को इंफ्रारेड मिसाइल से बचाती है। एयर इंडिया वन विमान में डायरेक्शनल इंफ्रारेड काउंटरमेजर सिस्टम लगा होता है। यह एक मिसाइल रोधी सिस्टम है जो विमान को इंफ्रारेड मिसाइल से बचाती है। इसके अलावा विमान की कुछ और खसियतों में चाफ एंड फ्लेयर्स प्रणाली है, जो रडार ट्रैकिंग मिसाइल से खतरा होने पर विमान को सुरक्षा प्रदान करती है।

जहरीली हवा से दिल्ली-एनसीआर को बचाने की जंग जारी, कई राज्यों ने मिलकर बनाई रणनीति

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली। दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों को जहरीली हवाओं से बचाने की जंग वैसे तो साल 2015 से छिड़ी हुई है, इसके कुछ सकारात्मक परिणाम भी आए है, लेकिन समस्या अभी भी जस की तस बनी हुई है। बारिश के बाद मौसम में बदलाव के साथ हर साल जहरीली हवाओं का खौफ सभी पर छाने लगता है। इस बार भी इसकी आहट लगते ही केंद्र से लेकर दिल्ली और उसके सभी पड़ोसी राज्य फिर सक्रिय हो गए है। नए सिरे से इस जंग को लड़ने की रणनीति बनाई गई है। हालांकि इन सारी स्थितियों के बीच जो खास पहलू यह है, कि सभी को इस समस्या की याद सिर्फ इसी सीजन में ही आती है। वैसे भी दिल्ली - एनसीआर की हवा की गुणवत्ता में पिछले कुछ दिनों में तेजी से हो रहा बदलाव चिंताजनक है।

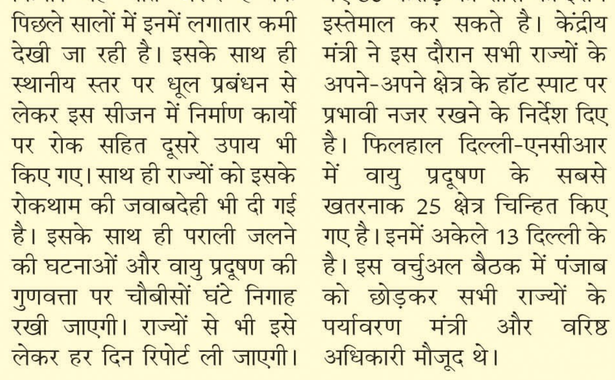

जहरीली हवाओं को लेकर राजनीति भी खूब होती है। हर कोई पंजाब, हरियाणा में जलने वाली पराली को इसके लिए जिम्मेदार बताता है। लेकिन केंद्रीय वन एवं पर्यावरण प्रकाश जावडेकर का कहना है कि इन जहरीली हवाओं के पीछे की वजह सिर्फ पराली नहीं है। इनमें पराली की धुंआ सिर्फ 40 फीसद ही होता है। जबकि बाकी 60 फीसद प्रदूषण स्थानीय वजहों के चलते होता है। इनमें धूल, वाहनों से होने वाला प्रदूषण, निर्माण कार्यो सहित उद्योगों से होने वाला प्रदूषण शामिल होता है। ऐसे में प्रदूषण से बचाव के लिए पराली के जलने की घटनाओं पर रोकथाम के साथ स्थानीय प्रदूषण में भी कमी लाने की जरूरत है।

दिल्ली-एनसीआर को जहरीली हवाओं से बचाने की छिड़ी जंग में पिछले कुछ सालों में काफी काम भी हुआ है। जिसमें पराली को जलने से रोकने के लिए राज्यों को ऐसे मशीनें उपलब्ध कराई गई है, जिसकी मदद से पराली को खेतों में छोटे-छोटे टुकडों में काट कर बदल दिया जाएगा। इससे वह खेतों में ही नष्ट हो जाती है और उसे जलाने की जरूरत नहीं है। केंद्र ने इसके लिए दिल्ली सहित उसके पांचों पड़ोसी राज्यों को करीब 17 सौ करोड़ रुपए की मदद भी उपलब्ध कराई थी। जिसमें पचास फीसद सब्सिड़ी में कोई भी किसान खरीद सकता है।

वहीं यदि सामूहिक रूप से खरीदने में अस्सी फीसद तक सब्सिडी दी गई। इस बीच पराली को खेतों में ही नष्ट करने वाली मशीनें खूब बांटी गई, लेकिन किसानों में पराली जलाना बंद नहीं किया। यह बात जरूर है कि पिछले सालों में इनमें लगातार कमी देखी जा रही है। इसके साथ ही स्थानीय स्तर पर धूल प्रबंधन से लेकर इस सीजन में निर्माण कार्यो पर रोक सहित दूसरे उपाय भी किए गए। साथ ही राज्यों को इसके रोकथाम की जवाबदेही भी दी गई है। इसके साथ ही पराली जलने की घटनाओं और वायु प्रदूषण की गुणवत्ता पर चौबीसों घंटे निगाह रखी जाएगी। राज्यों से भी इसे लेकर हर दिन रिपोर्ट ली जाएगी। साथ ही निगरानी के केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड(सीपीसीबी)की भी पचास टीमें गठित की गई है।

दिल्ली सहित पड़ोसी राज्यों के साथ केंद्रीय पर्यावरण मंत्री ने बनाई योजना

केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री जावडेकर ने गुरूवार को दिल्ली और एनसीआर को प्रदूषण से बचाने के लिए दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के साथ मिलकर बैठक की। जिसमें आने वाली स्थितियों से निपटने का रोडमैप तैयार किया गया। बैठक में पंजाब जैसे राज्यों ने पैसे की कमी की समस्या भी बताई, जिस पर केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने बताया कि उन्हें कृषि अनुसंधान के लिए उपलब्ध कराए गए 80 करोड़ की राशि का इसमें इस्तेमाल कर सकते है। केंद्रीय मंत्री ने इस दौरान सभी राज्यों के अपने-अपने क्षेत्र के हॉट स्पाट पर प्रभावी नजर रखने के निर्देश दिए है। फिलहाल दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के सबसे खतरनाक 25 क्षेत्र चिन्हित किए गए है। इनमें अकेले 13 दिल्ली के है। इस वर्चुअल बैठक में पंजाब को छोड़कर सभी राज्यों के पर्यावरण मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

त्योहारी सीजन में 15 अक्टूबर से चलाई जाएंगी 200 विशेष ट्रेनें

नई दिल्ली, आईएएनएस। रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और सीईओ वीके यादव ने बताया कि भारतीय रेलवे त्यौहारी सीजन में 15 अक्टूबर से 30 नवंबर के बीच 200 विशेष ट्रेनें चलाने की योजना बना रही है। रेलवे ने फिलहाल सभी सामान्य यात्री ट्रेनों को अनिश्चितकाल के लिए रद कर दिया है। कोरोना महामारी के चलते ये ट्रेनें 25 मार्च से रद हैं। रेलवे ने दिल्ली को देश के विभिन्न भागों से जोड़ने वाली 15 विशेष राजधानी ट्रेनों का संचालन 12 मई से और एक जून से लंबी दूरी की 100 ट्रेनों का संचालन शुरू किया गया है। रेलवे 12 सितंबर से 80 अतिरिक्त ट्रेनें भी चला रही है।

यादव ने गुरुवार को कहा कि हमने जोन के महाप्रबंधकों के साथ बैठक कर निर्देश दिया है कि वे स्थानीय प्रशासन से बातचीत कर कोरोना वायरस संक्रमण की स्थिति की समीक्षा करें। उनसे रिपोर्ट मांगी गयी है और इसी आधार पर फैसला होगा कि त्यौहारी सीजन में कितनी विशेष ट्रेनें चलाई जाएं। फिलहाल हमारा अनुमान है कि करीब 200 ट्रेनें चलेंगी, लेकिन यह हमारा अनुमान है, संख्या और ज्यादा भी हो सकती है। उन?होंने कहा कि रेलवे ने राज्य सरकारों की जरुरतों और महामारी के हालात को देखते हुए यात्री सुविधाओं की रोज समीक्षा करने का फैसला लिया है। जहां तक यात्री ट्रेनों की बात है, हम ट्रेनों की जरुरत, यातायात और कोविड-19 के हालात की रोज समीक्षा करेंगे। जहां भी जरूरत होगी, हम ट्रेनें चलाएंगे।

यादव ने कहा कि राज्य सरकारों के साथ भी समन्वय बना हुआ है। रेल बोर्ड एक साथ बहुत सारी ट्रेनों की घोषणा करने के बजाए जरूरत के अनुसार हर रोज दो चार ट्रेनें शुरू कर रहा है। क्योंकि कोरोना काल में बहुत सारे चीजों का ध्यान रखना पड़ता है। उन्होंने कहा कि इस दौरान भारतीय रेल यात्रियों की सुरक्षित यात्रा के लिए भी अभियान चला रही है और स्टेशनों और ट्रेनों में जरूरी जानकारी दी जा रही है। रेलवे स्टेशन के आसपास के गांव के लोगों को भी इस बारे में बताया जा रहा है।

मध्यप्रदेश के जबलपुर से लखनऊ और कानपुर को जोड़ने वाली एकमात्र ट्रेन चित्रकूट एक्सप्रेस साढ़े छह माह बाद फिर दौड़ेगी। रेलवे ने गुरवार को ट्रेन का कार्यक्रम जारी कर दिया है। यह ट्रेन 5 अक्टूबर को लखनऊ से जबलपुर के लिए रवाना होगी। वहीं छह अक्टूबर से यह ट्रेन नियमित तौर पर जबलपुर से लखनऊ जाएगी। ट्रेन के समय और रूट में कोई बदलाव नहीं किया गया है। कोविड 19 को देखते हुए ट्रेन को स्पेशल बनाकर चलाया जा रहा है। इस वजह से ट्रेन का नंबर बदला है। गाड़ी संख्या 05205 लखनऊ से शाम साढ़े पांच बजे जबलपुर के लिए रवाना होगी, जो अगले दिन सुबह 7.10 पर जबलपुर आएगी। छह अक्टूबर को ट्रेन रात 8.50 पर जबलपुर से लखनऊ के लिए रवाना होगी। ट्रेन में एक वातानूकूलित प्रथम सह द्वितीय श्रेणी, एक वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी, दो वातानूकूलित तृतीय श्रेणी, छह स्लीपर, 12 सामान्य और दो एसएलआर कोच समेत कुल 24 कोच होंगे।

3 अक्टूबर को हिमाचल प्रदेश के रोहतांग में अटल सुरंग का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली, एएनआइ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हिमाचल प्रदेश के रोहतांग में ये 10,000 फीट की ऊंचाई पर, यातायात के लिए दुनिया की सबसे लंबी सुरंग है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम नाम पर इस टनल को बनाया गया है। पीएमओ की तरफ से दी गई जानकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री सुबह 10 बजे 3 अक्टूबर को इसका उद्घाटन करेंगे। कैबिनेट द्वारा अनुमोदित रिसेप्शन योजना के अनुसार, पीएम मोदी को जिलों की परंपराओं के अनुसार उनके आगमन पर भव्य स्वागत किया जाएगा। उसी दिन पीएम के साथ केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री अनुराग ठाकुर भी होंगे। समाचार पीटीआई के अनुसार, समारोह में दौरान सभी कोविद -19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, 28 सितंबर को मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने कहा कि रणनीतिक अटल बिहारी रोहतांग को खोलने के बाद पीएम मोदी हिमाचल प्रदेश में दो जनसभाओं को संबोधित करेंगे।

भारत ने स्वदेशी लेजर गाइडेड एंटी टैंक मिसाइल का सफल परीक्षण किया

नई दिल्ली, आइएएनएस। पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर चीन से जारी तनाव के बीच रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन ने गुरुवार को स्वदेशी लेजर गाइडेड एंटी टैंक मिसाइल का दोबारा सफल परीक्षण किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसके लिए डीआरडीओ को बधाई दी है। रक्षा मंत्रालय ने बताया कि इस मिसाइल को महाराष्ट्र के अहमदनगर में एमबीटी अर्जुन टैंक से फायर किया गया।

केके रेंज में हुए परीक्षण के दौरान मिसाइल ने लक्ष्य को सफलतापूर्व नष्ट किया। इससे पहले 22 सितंबर को अहमदनगर में ही इस मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया था। यह मिसाइल 1.5 से 5 किमी तक बख्तरबंद वाहनों को ध्वस्त करने की क्षमता रखती है। इसे कई प्लेटफार्मों के जरिए लॉन्चिंग की क्षमता के साथ विकसित किया गया है। मौजूदा वक्त में यह अर्जुन टैंक की 120 मिमी बंदूक के जरिए परीक्षण से गुजर रही है। इस मिसाइल को डीआरडीओ के आयुध अनुसंधान और विकास प्रतिष्ठान पुणे ने विकसित किया है।

भारत ने कल बुधवार को बालेश्वर में जमीन से जमीन पर मार करने वाली क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस का सफलतापूर्वक परीक्षण किया था। इसे डीआरडीओ और रूस के वैज्ञानिकों के साझा प्रयास से विकसित किया गया है। यह सुपरसोनिक प्रक्षेपास्त्र आवाज की गति से भी 2.8 गुना तेज गति से अपने लक्ष्य को भेदने की क्षमता रखता है। इस प्रक्षेपास्त्र को किसी भी दिशा एवं लक्ष्य की ओर मनचाहे तरीके से छोड़ा जा सकता है। घनी आबादी में भी छोटे लक्ष्यों को सटीक भेदने में यह मिसाइल माहिर है। प्रक्षेपास्त्र 8.4 मीटर लंबा और 0.6 मीटर चौड़ा है। इसका वजन 3000 किलोग्राम है।

ब्रह्मोस प्रक्षेपास्त्र 300 किलोग्राम वजन तक विस्फोटक ढोने और 300 से 500 किलोमीटर तक प्रहार करने की क्षमता रखता है। इसे जमीन, हवा, पानी और मोबाइल लांचर से दागा जा सकता है। ब्रह्मोस मिसाइल एक दो चरणीय मिसाइल है जिसमें ठोस प्रोप्लेट बूस्टर और एक तरल प्रोप्लेट रेमजेम सिस्टम है। ब्रह्मोस का पहला परीक्षण 12 जून, 2001 को आइटीआर चांदीपुर से ही किया गया था। हाल के दिनों में चीन से जारी तनाव के बीच भारत नई-नई किस्म की मिसाइलों के साथ पुरानी मिसाइलों का भी प्रायोगिक परीक्षण कर रहा है।

उत्तर प्रदेश में 15 के बाद चरणबद्ध तरीके से खोले जा सकेंगे स्कूल व शैक्षणिक संस्थान

लखनऊ, जेएनएन। कोरोना वायरस संक्रमण में केंद्रीय गृह मंत्रालय पर संस्तुति पर उत्तर प्रदेश सरकार ने भी अनलॉक के पांचवें चरण की गाइडलाइन जारी कर दी है। इसके तहत प्रदेश में 15 अक्टूबर के बाद से सभी स्कूल तथा शिक्षण संस्थान के खोले जाने की मंजूरी शामिल है।

उत्तरप्रदेश के लिए शासन ने गुरुवार को अनलॉक के पांचवें चरण की गाइडलाइंस कर दी है। गृह मंत्रालय की एडवाइजरी के अनुसार उत्तर प्रदेश सरकार ने अनलॉक-5.0 के लिए आज अपनी नई गाइडलाइन की। जिसके तहत प्रदेश में सभी स्कूल और शैक्षणिक संस्थान 15 अक्टूबर के बाद चरणबद्ध तरीके से खोले जा सकेंगे। शासन ने निर्देश दिया है कि प्रदेश में स्कूल प्रबंधन अब जिला प्रशासन से विचार-विमर्श कर खोल स्कूल सकेंगे।

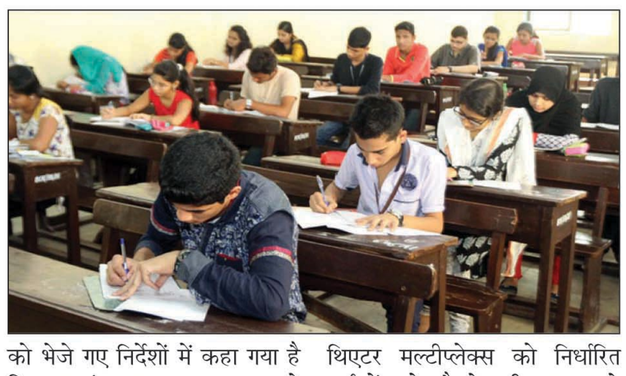

मुख्य सचिव राजेंद्र कुमार तिवारी के सभी मंडलों के कमिश्नर के साथ जिलाधिकारियों व पुलिस कप्तानों को भेजे गए निर्देशों में कहा गया है कि गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने 30 सितंबर को कोविड-19 की स्थिति को देखते हुए गतिविधियों को फिर से शुरू करने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। वहीं खिलाड़ियों के प्रशिक्षण के लिए युवा कल्याण खेल मंत्रालय भारत सरकार की तरफ से जारी किए गए मानकों के मुताबिक 15 अक्टूबर 2020 से स्वीमिंग पूल भी खोले जाने की अनुमति होगी। इनके अलावा कंटेनमेंट जोंस के बाहर सिनेमा हॉल थिएटर मल्टीप्लेक्स को निर्धारित दर्शकों को बैठने की क्षमता से अधिकतम 50 प्रतिशत लोगों के बैठेने की अनुमति है। इस आदेश के बाद दुर्गा पूजा के आयोजन में को भी अनुमति मिलेगी, जिसमें 100 से ज्यादा लोग शामिल हो सकेंगे। इसके साथ ही प्रदेश में 50 प्रतिशत दर्शकों के साथ सिनेमाघर तथा मल्टीप्लेक्स भी खुलेंगे। अब खेल की गतिविधियों को भी गति मिलेगी। तरणताल भी खोले जाएंगे।

कंटेनमेंट जोन से बाहर शैक्षणिक कार्य के लिए सभी स्कूल और कोचिंग संस्थान 15 अक्टूबर के बाद चरणबद्ध तरीके से खोले जा सकेंगे। निर्णय स्कूल/संस्थान के प्रबंधन से विचार-विमर्श कर और स्थिति का आंकलन कर जिला प्रशासन लेगा। इसमें ऑनलाइन शिक्षा के लिए अनुमति जारी रहेगी और इसे प्रोत्साहित किया जाएगा और इस व्यवस्था को प्राथमिकता दी जाएगी। जहां पर स्कूल ऑनलाइन कक्षाएं चला रहे हैं और कुछ छात्र भौतिक रूप से कक्षा में शामिल होने की बजाए ऑनलाइन ही इच्छुक हैं, उन्हें इसकी अनुमति दी जा सकती है। छात्र संबंधित स्कूल में माता-पिता की लिखित सहमति से ही उपस्थित हो सकते हैं। स्कूल में छात्रों की उपस्थिति बिना माता-पिता की सहमति के अनिवार्य नहीं कराई जा सकती। यह माता-पिता की सहमति पर निर्भर करेगा।

स्कूल को खोलने के लिए स्वास्थ्य और सुरक्षा सावधानियों के संबंध में शिक्षा विभाग द्वारा एसओपी स्कूल, शिक्ष एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय के एसओपी के आधार पर स्थानीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए जारी की जाएगी। जिन स्कूलों को खोलने की अनुमति दी जाएगी, उनको अनिवार्य रूप से शिक्षा विभाग के जारी एसओपी का अनुपालन कराना होगा। इन प्रावधानों के अधीन सार्वजनिक पुस्तकालयों को खोलन की अनुमति भी मिलेगी। इसके अलावा महाविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों के खोलने के समय का निर्धारण उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय भारतय सरकार केसाथ भारत सरकार की सहमति और वर्तमान स्थिति का आंकलन करते हुए किया जाएगा। इनमें भी ऑनलाइन क्लासेज को प्राथमिकता दी जाएगी। इसमें स्वैच्छिक रूप से क्लास में शामिल होने वाले बच्चों को अनुमति दी जा सकती है। अभिभावकों की लिखित सहमति के बाद बच्चे से स्कूल जा सकते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने खारिज की कोरोना महामारी के कुप्रबंधन की स्वतंत्र जांच की मांग वाली याचिका

नई दिल्ली, पीटीआइ। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को कोरोना महामारी से निबटने में कथित कुप्रबंधन की स्वतंत्र जांच की मांग के लिए पूर्व नौकरशाहों की ओर से दाखिल जनहित याचिका को खारिज कर दिया। सुनवाई के दौरान पूर्व नौकरशाहों की ओर से वकील प्रशांत भूषण ने पैरवी की। जस्टिस एल नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष प्रशांत भूषण ने कहा कि चार फरवरी को केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से एक एडवाइजरी जारी की गई थी। फिर भी चार मार्च तक विदेशों से आने वाले यात्रियों की जांच नहीं की गई। प्रशांत भूषण ने आगे कहा कि 24 फरवरी को नमस्ते ट्रंप कार्यक्रम के आयोजन को मंजूरी दी गई। विशेषज्ञों का मानना था कि संपूर्ण लॉकडाउन नहीं लगाया जाना चाहिए। लॉकडाउन के कारण जीडीपी में 23 फीसदी की

गिरावट दर्ज की गई और अर्थव्यवस्था को चोट पहुंची। भूषण ने अपनी दलील में आरोप लगाया कि सरकार कोरोना संकट पर काबू पाने में विफल रही है। संक्रमण से 63 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हो चुके हैं। प्रशांत भूषण ने कहा कि पर्या?त संख्या में पीपीई किट के लिए कथि?त तौर पर कदम नहीं उठाए गए जिससे अनेक डॉक्टरों की जान चली गई। भूषण की दलील पर अदालत ने कहा कि यह सार्वजनिक बहस का मामला है। न्यायालय इसमें दखल नहीं देना चाहता है। ये मामले सरकार के लिए हैं ओर प्राधिकारियों को स्थिति से निबटने के लिए पर्याप्त आजादी दी जानी चाहिए।

बता दें कि पूर्व नौकरशाहों के एक समूह की ओर से दाखिल इस जनहित याचिका में जांच आयोग कानून के तहत आयोग गठित करके कोरोना से निबटने में हुई खामियों का पता लगाने की गुजारिश की गई थी। इस बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, गुरुवार को बीते 24 घंटे में देश में कोरोना के 86,821 नए मामले सामने आए जिसके साथ संक्रमितों का आंकड़ा 63 लाख से अधिक हो गया है। बीते 24 घंटे में 85,376 लोगों ने बीमारी को शिकस्त भी दी है जिसके साथ ही 52,73,201 लोग महामारी से उबर चुके हैं।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज शुक्रवार, 2 अक्टूबर, 2020

संक्षेप समाचार

आदर्श शिक्षक के साथ समाज के चिंतक थे गोपाल जी : चंद्र शेखर

घूरपुर। क्षेत्र के वरिष्ठ समाजसेवी, शिक्षक व ब्राह्मण परिषद के प्रबंधक रहे पंडित गोपाल कृष्ण शुक्ल (83) के निधन की सूचना से इलाके के समाजसेवियों में शोक की लहर दौड़ गई ।श्री शुक्ल के निधन पर गुरुवार के दिन एक शोक सभा पूर्व प्रधानाचार्य चन्द्र शेखर पांडेय (व्यासजी) के नेतृत्व में तातारगंज में की गई ।इस बीच दर्जनों गणमान्य लोगों ने दिवंगत शुक्ल की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से दो मिनट का मौन रख प्रार्थना की । शोक व्यक्त करते हुए चंद्र शेखर पांडेय ने कहा कि श्री शुक्ल जब तक ईश्वरदीन छेदी लाल इंटर कॉलेज में शिक्षक रहे तब तक एक आदर्श शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य निर्वहन किये ।सेवानिवृत के बाद समाज को जोड़ने के लिए उन्होंने क्षेत्र के संभ्रांत लोगों से मिल ब्राह्मण परिषद का गठन किया ,और समाज को एक सूत्र में पिरोने के लिए अपने अंतिम सांस तक लगे रहे । प्रबंधक श्याम सुंदर तिवारी ने कहा कि शुक्ल जी बच्चों को शिक्षा देने के साथ बच्चों के अंदर एक संस्कार का संचार करते थे जिससे आज भी उनके द्वारा शिक्षा ग्रहण करने वाले समाज मे अपनी अलग पहचान बना कर क्षेत्र और समाज को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

कारोबारी के घर से चोरों ने लाखों रुपए के उड़ाए जेवरात

नैनी। कोतवाली क्षेत्र स्थित नैनी बाजार में बीती रात चोरों ने एक कारोबारी के घर को निशाना बनाते हुए हजारों रुपए नकदी समेत लाखों रुपए के जेवरात चोरी कर फरार हो गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल की। भुक्तभोगी ने चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए नैनी कोतवाली में तहरीर दी है, लेकिन समाचार लिखे जाने तक रिपोर्ट दर्ज नहीं हो पाया था। कर पाई थी।

जानकारी के मुताबिक नैनी बाजार निवासी बबलू माली पुत्र लल्लू माली फूल का कारोबार करते हैं। बीते तीन दिन पूर्व उनकी पत्नी नीतू माली बच्चों को अपने साथ लेकर मायके गई हुई हैं। बुधवार रात बबलू माली भोजन आदि करने के बाद मकान के पहली मंजिल पर वह सो गया। गुरुवार सुबह जब वह सो कर उठा तो दूसरी मंजिल कमरे में पहुंचा और सामानों को अस्त-व्यस्त देख दंग रह गया। भुक्तभोगी के मुताबिक चोर छत के रास्ते से होते हुए खिड़की की मदद से कमरे में दाखिल हो गए और अलमारी का लॉक तोड़कर लगभग पचास हजार रुपए नकदी समेत सोने चांदी से निर्मित जेवरात पर हाथ साफ कर फरार हो गए।

चोरी के बाद बिखरा सामान

रिटायर्ड इंस्पेक्टर के घर हजारों की चोरी

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के लेप्रोसी मिशन क्रॉसिंग के समीप एक सेवानिवृत्त इंस्पेक्टर के घर चोरों ने ताला तोड़कर नकदी समेत हजारों रुपए के जेवरात पर हाथ साफ कर फरार हो गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और हर बार की तरह जांच पड़ताल की खानापूर्ति करते हुए बैरंग वापस लौट आई। भुक्तभोगी ने चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए नैनी कोतवाली में तहरीर दी है।जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के लेप्रोसी मिशन क्रॉसिंग के समीप अभयचंद पुर कॉलोनी निवासी जितेंद्र सिंह जो उत्तर प्रदेश पुलिस विभाग से बतौर इंस्पेक्टर पद से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। वह मकान बनवाकर सपरिवार रहते हैं। मंगलवार को उनके पुत्र अंकित सिंह समेत परिजन अपने मूल निवास चित्रकूट गए हुए थे। गुरुवार को जब वह वापस लौटे तो मेन गेट से लेकर समस्त कमरों के ताले टूटे देख दंग रह गए। भुक्तभोगी के मुताबिक चोर पड़ोसियों के घरों को बाहर से बंद कर मकान का ताला तोड़कर लगभग 15 हजार रुपए नकदी, एक सोने की अंगूठी व एक जंजीर चोरी कर फरार हो गए।

लुटेरा गैंग गिरफ्तार, तीन बाइक व अवैध तमंचा बरामद

कोरांव पुलिस ने चारों आरोपियों को भेजा जेल, देशी बम भी बरामद

कोरांव। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर चोरी छिनैती हत्या लूट को रोकने के लिए कोरांव पुलिस ने अभियान चलाकर कार्यवाही कर रही है। इसी क्रम में गुरुवार को लुटेरा गैंग के चार लोगो को गिरफ्तार की है।

कोरांव थाना प्रभारी चंद्रभान सिंह ने बताया कि नगर में वाहन चेकिंग कर रहे थे कि मुखबिर द्वार सूचना मिली कि कुछ लोगो द्वारा चोरी की बाइक लेकर कही लूटने के फिराक में है। पुलिस ने घेरा बंदी करते हुए चार लोगो को गिरफ्तार करी है। जिनके पास से चोरी की तीन बाइक, एक तमंचा व दो देशी बम बरामद की है। गिरफ्तार अभियुक्तों में से रंजीत केशरी पुत्र शिव शंकर केशरी निवासी नगर पंचायत कोरांव, दिल हुसैन पुत्र मुन्ना अंसारी निवासी दुर्जनी थाना हालिया जिला मीरजापुर, रोहित कुशवाहा पुत्र हरिशंकर कुशवाहा निवासी सेमरी बाघराय व अभयराज सिंह पुत्र सुरेंद्र प्रसाद सिंह निवासी दुर्जनी थाना हलिया सामिल है। गिरफ्तारी टीम में उपनिरीक्षक बृजेश यादव, उपनिरीक्षक सच्चिदानंद यादव कांस्टेबल सिद्धेश्वर पांडेय, कांस्टेबल चंद्रशेखर यादव, कांस्टेबल राहुल, कांस्टेबल गौतम सिंह, कांस्टेबल विकाश यादव व कांस्टेबल लकी यादव सामिल है।

पुलिस की गिरफ्त में बाइक सहित लुटेरे

प्रेमी जोड़े को संदिग्ध हाल में पकड़ मारपीट पुलिस को सौंपा

घूरपुर। क्षेत्र के इरादतगंज हवाई पट्टी पर बने मंच की आड़ में एक प्रेमी जोड़े को संदिग्ध हाल में देख ग्रामीणों ने घेर मारना शुरू कर दिया । सूचना पुलिस को हुई तो इलाके में तहल पीआरवी टीम पहुंच गई ।प्रेमी जोड़ों को पुलिस थाने ले आई जहां दोनो के परिजनों को बुला सौंप दिया गया। घूरपुर के इरादतगंज हवाई पट्टी पर बने मंच की आड़ में एक युवक व युवती संदिग्ध हाल में दिखाई दिए ।बताया गया कि इनकी सुरक्षा व लोगों की आवाजाही को बताने के लिए भी एक युवक खड़ा था ।संदिग्ध हाल में प्रेमी जोड़े को देख ग्रामीणों ने घेर लिया और दोनों को मारने पीटने लगे ।तब तक किसी ने डॉयल 112 पुलिस को सूचना दे दी तब तक पुलिस पहुंच गई और तीनों को पकड़ घूरपुर थाने ले आई ।

डाक्टर शेख मोइनुद्दीन बने अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव

डाक्टर शेख मोइनुद्दीन

फूलपुर। अपनी लोकप्रियता व कर्तव्यपरायणता के चलते डॉक्टर शेख मोइनुद्दीन को आम आदमी पार्टी में अल्प संख्यक प्रकोष्ठ का प्रदेश सचिव मनोनीत किया गया है। जिससे क्षेत्र के आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं में हर्ष व्याप्त है। डाक्टर शेख मोइनुद्दीन फूलपुर के बीरकाजी गांव में एक अस्पताल के संचालक भी हैं। साथ ही विगत कई वर्षों से आम आदमी पार्टी में सक्रिय भागीदारी निभा रहे है। उनके कार्यों से प्रभावित होकर अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष शकील मलिक ने उन्हें प्रदेश सचिव की जिम्मेदारी सौंपते हुए पार्टी को मजबूती प्रदान करने की अपील की। डाक्टर शेख मोइनुद्दीन ने प्रदेश नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए पार्टी की नीतियों पर चलते हुए मजबूती प्रदान करने की बात कही।

कबड्डी प्रतियोगिता के दूसरे दिन करछना ने मारी बाजी

सपा जिला अध्यक्ष योगेश यादव ने खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की

करछना। विकास खण्ड करछना के गडैला गाव मे आयोजित दो दिवसीय विशाल कबड्डी प्रतियोगिता के दूसरे दिन करछना 47 डीहा, रीवा 25 बरबोझा, सुजौना 23 सहसो 19 कौधियारा 20 बहराइच 28 हनुमानगज 35, धनुपुर 26, हडिया मिजार्पुर 32 अंक के साथ विजेता और लीग मुकाबले जीतकर फाइनल की दावेदारी मजबूत की। प्रतियोगिता मे 22 टीमों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता के संयोजक विनय सिंह यादव, रविकांत पाडेय हरिमोहन मोहन लाल यादव, सपा के जिला अध्यक्ष योगेश यादव मुखिया यादव, संदीप सिंह पटेल उमेश सिंह, धीरेन्द्र यादव, राम सागर मुखिया अनिल यादव विजय यादव, सन्त रमन हर हर रमन रविन्द्र, लवलेश आशीष रविंद सिंह, संदीप केसरवानी, ओमप्रकाश कुशवाहा, राजेन्द्र यादव आदिबड़ी सख्या में खेल प्रेमी मौजूद रहे। इसके अलावा प्रतियोगिता दूर दराज से आए अतिथियों का विशाल कबड्डी प्रतियोगिता के अध्यक्ष विनय सिंह यादव व ग्राम प्रधान आलोक यादव ने अंगवस्त्रम से सम्मानित किया गया ।

प्रतियोगिता में अपना दमखम दिखाते खिलाड़ी

करछना में 48 की कोरोना जांच सभी निगेटिव

करछना। गुरुवार को सीएचसी करछना मे 48 लोगो की कोरोना जांच की गई जिसमे सभी की रिर्पोट निगेटिव आई ।अधीक्षक डा0 जीके तिवारी ने बताया कि आज हुई जाच मे सभी लोगो की रिर्पोर्ट निगेटिव आई ।कई दिन बाद कोरोना जाच मे रिर्पोर्ट निगेटिव आने के बाद अस्पताल कर्मियो ने राहत की सांस ली।

बिजली कटते ही गायब हो जाता है नेटवर्क

करछना। इन दिनो करछना क्षेत्र मे मोबाइल सचालित करने के लिए जगह जगह लगाये गये मोबाइल टावर के सचालको द्धारा डीजल चोरी करने के चक्कर मे मोबाइल का नेटवर्क कई घंटे गायब रहता है जिससे लोगो को भारी परेशानी का सामना करना पडता है ।करछना समेत कौवा बरदहा,रोकडी भडेवरा हनुमानपुर चनैनी,भीरपुर हिन्दुपुर डीहा बसही कटका आदि बाजारो और गावो मे लगाये टावर से अक्सर नेटवर्क गायब रहता है जिससे लोगो को भारी दिक्कत उठानी पडती है ।लोगो ने बताया कि टावर पर रखे गये लोग डीजल बेचने के चक्कर मे यह समस्या बनी रहती है और उनके द्धारा जनरेटर नही चलाया जाता और बार बार जनरेटर बंद कर डीजल की बचत की जाती है जिसके चलते नेटवर्क की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण एक ओर जहा बैकिग और सरकारी कार्यालयो मे सर्वर की समस्या से दो चार होना पडता है वही मोबाइल की सेवा पूरी तरह से बाधित हो जाती है जबकि लोग शिकायत तो करते है लेकिन विभाग द्धारा उसपर कार्यवाही न किए जाने से समस्या दिन पर दिन बदत्तर होती जा रही है जिससे लोगो मे गहरा आक्रोश व्याप्त है ।लोगो ने जिम्मेदारो से इस समस्या के ओर ध्यान देने की माग की है।

श्रृंगवेरपुरधाम में पूर्णिमा पर माँ गंगा की हुई आरती

मां गंगा की पूजा अर्चना करते हुए

नवाबगंज। श्रृंगवेरपुरधाम स्थित श्री रामघाट में प्रत्येक पूर्णिमा पर दिव्य गंगा आरती का आयोजन जय श्रीराम सेवा संस्थान श्रृंगवेरपुरधाम के द्वारा किया जाता है। दिव्य गंगा आरती का उद्देश्य भक्तो में सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करना और सनातन परंपरा को बढ़ावा देना है। दिव्य गंगा आरती का शुभारंभ गंगा संकल्प के साथ किया गया। भक्तो ने संकल्प लिया कि हम सभी लोग श्रृंगवेरपुरधाम से अयोध्या तक हिंदुत्व की भावना को बढ़ावा देंगे। जय श्रीराम सेवा संस्थान के महामंत्री अरुण द्विवेदी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि हमारी संस्था समाज कल्याण के लिए अपने कर्तव्यों का पालन कर रही है। जिससे लोगो को एकता के सूत्र में बांधा जा सके। जय श्रीराम सेवा संस्थान के अध्यक्ष संजय तिवारी ने अध्यक्षता करते हुए सभी को सम्बोधित किया। कहा कि हम सभी के मेहनत से राष्ट्र अवश्य आगे बढ़ेगा।

कार्यक्रम में केडी मिश्र प्रधुम्न एवम अटल त्रिपाठी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर संतोष शुक्ल, विनय मिश्र, शिवदीप त्रिपाठी, सत्येंद्र तिवारी, वरुण द्विवेदी, के साथ अन्य लोग मौजूद रहे।

गरीब को नहीं मिला प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ,ग्राम प्रधान की आपसी तालमेल न होने के कारण

लालापुर। प्रदेश सरकार भले ही गरीबों को पीएम आवास दिलाकर लाभान्वित करने का दावा कर रही हो लेकिन अभी भी बहुत से गरीब परिवार इस योजना से वंचित है और बरसात के महीने में पुराने मकानों में रहने को मजबूर हैं। बारिश से बचने के लिए इन परिवारों को पालीथिन का सहारा लेना पड़ रहा है। जसरा ब्लाक के गोबरा ग्राम के निवासी सुनील कुमार भी आवास से वंचितों में से एक है। सुनील कुमार गांव में ही नाई का काम करता है, परिवार में उनकी दो बेटियां और पत्नी है,बेटियों की पढ़ाई और परवरिश करने में ही रुपए खत्म हो जाते हैं। सुनील कुमार आज भी मिट्टी की दीवार से बने मकान में जीवन यापन कर रहा है। छत के नाम पर सीमेन्ट के चद्दर छायी हैं जो बहुत पुरानी हो गई हैं और कई स्थानों पर टूट गई हैं। थोड़ी सी बारिश के बाद घर में चारों ओर पानी टपकने लगता है। इस दौरान घर में रखे सामान भी भीग जाते हैं। सुनील कुमार ने बताया कि कई बार ग्राम प्रधान से आवास की मांग की गई लेकिन आज तक आवास नहीं मिला है ।आवास के नाम पर कई बार ग्राम प्रधान रुपए लेकर भी गए लेकिन इसके बाद भी उसे आवास का लाभ नही मिला है ।पीड़ित का कहना है कि चुनाव के दौरान वोट को लेकर आपसी तालमेल न होने के कारण ग्राम प्रधान उन्हें आवास नहीं दिला रहे हैं।

दो पक्षों में मारपीट दो लहूलुहान केस दर्ज

घूरपुर। क्षेत्र के इरादतगंज हवाई पट्टी पर बुधवार की देर रात अलग अलग गांव के दो लोगों में किसी बात को लेकर विवाद हो गया ।जिसमें एक दूसरे ने आपस मे मारपीट करते हुए सिर फूडऔल कर लिया। पुलिस ने पक्ष की शिकायत पर केस दर्ज कर चालान कर दिया है। घूरपुर थाना क्षेत्र के नरैयहवा गांव निवासी बालकृष्ण पुत्र श्रीनाथ व चौकठा गांव निवासी सुरेंद्र पटेल उर्फ बाबूजी पुत्र स्व करन पटेल के बीच बुधवार की रात इरादतगंज हवाई पट्टी पर किसी बात को लेकर कहासुनी होने लगी और एक दूसरे से भिड़ गए ।इस बीच दोनो ने एक दूसरे के सिर पर ईंट पत्थरों से हमला कर दिया ।जिससे दोनों के सिर फूट गए। सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों को थाने ले गई और इलाज के अस्पताल भेज कर गुरुवार के केस दर्ज कर चालान कर दिया ।

हाईकोर्ट समाचार

हाईकोर्ट ने यूपी में हेड कान्सटेबिलों को रिवर्ट कर पीएसी में भेजने के आदेश पर लगाई रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरूवार को हेड कान्सटेबिल से कान्सटेबिल पद पर रिवर्ट (पदावनत) किए गये सैकडों हेड कान्सटेबिलों की याचिका पर सुनवाई के बाद पदावनत आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगा दी। कोर्ट के पूर्व पारित आदेश पर आज इस याचिका की सुनवाई हुई। शासन की तरफ से अपर महाधिवक्ता मनीष गोयल तथा हेड कान्सटेबिलों की तरफ से सीनियर एडवोकेट विजय गौतम ने बहस की। कोर्ट में आज शासन की तरफ से लिखित में प्राप्त जानकारी दी गयी कि इन कान्सटेबिलों के पदावनत आदेश को संशोधित कर दिया गया है। यह आदेश जस्टिस अजय भनोट ने हेड कान्सटेबिल पारस नाथ पाण्डेय समेत सैकडों हेड कान्सटेबिलों की याचिका पर दिया है। याचिका में 9 सितम्बर 2020 व 10 सितम्बर 2020 को पारित डीआईजी स्थापना, पुलिस मुख्यालय, उप्र व अपर पुलिस महानिदेशक, पुलिस मुख्यालय उ प्र के आदेशों को चुनौती दी गयी है। इन आदेशों द्वारा प्रदेश के विभिन्न जिलों में तैनात 890 हेड कान्सटेबिलों को पदावनत कर आरक्षी बना दिया गया है और उन्हें पीएसी में स्थानांतरित कर दिया गया है। कोर्ट के कहने पर शासन से प्राप्त लिखित इन्स्ट्रक्शन को कान्सटेबिलों की तरफ से बहस कर रहे सीनियर को पिछली तिथि पर मुहैया करा दिया गया था। मालूम हो कि प्रदेश सरकार की तरफ से अपर महाधिवक्ता मनीष गोयल ने कोर्ट में सुनवाई की पहली तिथि पर इस केस में कोर्ट से तीन दिन का समय मांगा था तथा कहा था कि हम शासन से इस मामले में आवश्यक जानकारी भी हासिल कर लेगें। हेड कान्सटेबिलों की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता विजय गौतम ने कोर्ट से पदावनत आदेश पर रोक लगाने की मांग की थी, परन्तु कोर्ट ने कहा था कि शासन से जरूरी जानकारी आने के बाद ही वह इस मामले को सुनेगी। याचिकाओं में मुख्य रूप से कहा गया है कि इतने वृहद स्तर पर हेड कान्सटेबिलों को पदावनत बगैर उन्हें सुनवाई का अवसर दिए करना नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त के विपरीत है। याचियों को 20 वर्ष के बाद सिविल पुलिस से पीएसी में वापस भेजना शासनादेशों के विरूद्ध है। कोर्ट अब इन याचिकाओं पर एक माह बाद सुनवाई करेगी।

टीचर भर्ती में फार्म भरने में त्रुटि सुधार के लिए सचिव बेसिक शिक्षा बोर्ड को निर्देश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 69 हजार सहायक अध्यापक भर्ती में शामिल अभ्यर्थी द्वारा आवेदन फॉर्म में की गई मामूली त्रुटि को सुधारने का सचिव बेसिक शिक्षा परिषद को निर्देश दिया है। अभ्यर्थी सरिता की याचिका पर यह आदेश न्यायमूर्ति अजीत कुमार ने दिया। याची के अधिवक्ता का कहना था कि याची ने आवेदन फॉर्म भरते समय अपने इंटरमीडिएट का रोल नंबर और बी एड का प्राप्तांक भरने में गलती कर दी ।इन मामूली त्रुटियों की वजह से उसका अभ्यर्थन स्वीकार नहीं किया जा रहा है। अधिवक्ता का कहना था की हाईकोर्ट ने ऐसे ही कुछ मामलों में त्रुटि सुधार का अवसर देने का निर्देश दिया है। साथ ही अर्चना चैहान केस में सुप्रीम कोर्ट ने भी मानवीय त्रुटि को सुधारने का निर्देश दिया है ।कोर्ट ने सचिव बेसिक शिक्षा परिषद से कहा है कि वह याची द्वारा त्रुटि सुधारने के आवेदन पर विचार कर निर्णय लें । याची से एक सप्ताह में अपना प्रत्यावेदन सचिव को देने का निर्देश दिया है।

पुलिस भर्ती के रिक्त पदों पर नियुक्ति को लेकर सरकार को जवाब देने का अन्तिम मौका

प्रयागराज। इलाहाबाद हाइकोर्ट इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दो हजार अट्ठारह की 41520 पदों पर पुलिस कांस्टेबल भर्ती के मामले में बचे हुए 5292 पदों पर नियुक्ति को लेकर दाखिल याचिका पर राज्य सरकार को जवाब दाखिल करने के लिए एक माह का अंतिम अवसर दिया है। कोर्ट ने इस मामले में एक साल पहले ही राज्य सरकार से जवाब मांगा था। मगर सरकार की ओर से कोई जवाब दाखिल न करने पर कोर्ट ने नाराजगी जाहिर करते हुए एक और अवसर दिया है। अजीत यादव व 115 अन्य की याचिका पर यह आदेश न्यायमूर्ति अभिनव उपाध्याय और प्रकाश पाडिया की पीठ ने दिया। याचिका में कहा गया है कि पुलिस व पीएसी भर्ती में तमाम पद रिक्त रह गए हैं। जिन पर सरकार नियुक्ति ना करके पदों को अग्रसारित कर रही है। इस मामले में सरकार से जवाब मांगा है।

पहले से मुद्रित आदेश के खाली स्थान को भरकर जारी सम्मन अवैध, आदेश रद्द

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा है कि अपराध का संज्ञान लेना और अभियुक्त को सम्मन जारी करना गंभीर न्यायिक प्रक्रिया है। आदेश मे यह दिखायी देना चाहिए कि मजिस्ट्रेट ने तथ्यों व विधिक प्रावधानों के आधार पर आदेश पारित किया है। कोर्ट ने कहा है कि पहले से मुद्रित प्रपत्र के खाली स्थान को भरकर न्यायिक विवेक के प्रयोग किये बगैर जारी सम्मन आदेश विधि विरूद्ध एवं न्यायिक मानदंडों के विपरीत है। कोर्ट ने कहा है कि ऐसे आदेश जारी करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। ऐसी प्रथा तत्काल रोक देनी चाहिए। कोर्ट ने गाजियाबाद के न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा 20 जून 2020 को जारी सम्मन को निरस्त कर दिया है और पत्रावली वापस करते हुए नये सिरे से आदेश पारित करने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी ने कविनगर थाना क्षेत्र के आशू रावत की याचिका पर दिया है ।कोर्ट ने हिन्दी भाषा में दिये गये अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्थापित विधि सिद्धांतों का उल्लेख किया है। कोर्ट ने कहा है कि मजिस्ट्रेट को आदेश पारित करते समय अपने न्यायिक विवेक का प्रयोग करना चाहिए। पहले से मुद्रित आदेश की खाली जगह भरकर दिये गये आदेश को विवेक का प्रयोग कर पारित आदेश नहीं माना जा सकता। याची के खिलाफ सूचना तकनीकी कानून की धारा 67 व 67 ए के तहत इस्तगासा दाखिल किया गया है। जिस पर मजिस्ट्रेट ने पहले से मुद्रित आदेश के खाली स्थान भरकर सम्मन जारी किया था। याचिका में मुकदमे व सम्मन दोनो को अवैध करार देते हुए रद्द करने की मांग की गयी थी। कोर्ट ने अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग कर सम्मन आदेश को अवैध करार देते हुए रद्द कर दिया है।

हाईवे की डिवाइडर से टकराया बाइक सवार युवक घायल, हालत नाजुक

घूरपुर। घूरपुर के हाईवे ओवर बृज पर अनियंत्रित बाइक सवार डिवाइडर से टकरा गिर कर गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने एसआरएन में भर्ती कराया है। मध्य प्रदेश के रीवा जनपद के सोनौरी ककरहा घाट निवासी इबरान उर्फ बबलु (25)पुत्र सलीम अपनी पत्नी को लेकर इरादतगंज गांव स्थित अपने बहनोई आजाद के यहां आया था। बुधवार की रात वह बाइक लेकर अकेले शहर की ओर जा रहा था कि जैसे ही बादलगंज पेट्रोल पंप के सामने पहुंचा की बाइक अनियंत्रित होकर हाईवे की डिवाइडर से टकरा गिर गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस इलाज के लिए उसे सीएचसी जसरा ले गई ।जहा नाजुक हालत देख डाक्टरों ने एसआरएन रिफर कर दिया। जहां पर उसकी हालत नाजुक बताई जा रही है।

प्रयागराज हलचल

प्रयागराज शुक्रवार, 2 अक्टूबर, 2020

संक्षेप समाचार

खण्ड शिक्षा अधिकारी परीक्षा का परिणाम घोषित

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज ने गुरूवार को खण्ड शिक्षा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा 2019 का परिणाम घोषित कर दिया है। जिसमें 309 पदों हेतु 4591 अभ्यर्थी मुख्य परीक्षा में सम्मिलित होंगे। उल्लेखनीय है कि प्रारम्भिक परीक्षा के लिए कुल 5,28,313 ऑनलाइन आवेदन प्राप्त हुए थे। जबकि परीक्षा में कुल 2,34,064 अभ्यर्थी सम्मिलित हुए। इस परीक्षा में चयन हेतु कुल पदों की संख्या 309 है। जिसमें रिक्त पदों के सापेक्ष मुख्य परीक्षा हेतु कुल 4591 अभ्यर्थियों को सफल घोषित किया गया है। उक्त जानकारी आयोग के सचिव जगदीश ने देते हुए बताया है कि मुख्य परीक्षा का कार्यक्रम एवं अन्य जानकारियां अलग से जारी किया जायेगा। महिला आरक्षण के सम्बंध में प्रश्नगत परीक्षा परिणाम उप्र राज्य सरकार द्वारा उच्च न्यायालय में योजित विशेष अपील सं. 475/2019 में उच्च न्यायालय द्वारा पारित होने वाले अंतिम निर्णय के अधीन रहेगा। परिणाम से सम्बंधित प्राप्तांक तथा श्रेणीवार कटऑफ अंक अंतिम चयन परिणाम घोषित होने के उपरान्त आयोग की वेबसाइट पर प्रदर्शित किये जायेंगे।

फर्जी अध्यापकों के खिलाफ की जाय कार्रवाई : मण्डलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर0 रमेश कुमार ने गुरूवार को गांधी सभागार में बेसिक शिक्षा विभाग में लागू मिशन प्रेरणा के प्रभावी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण हेतु मंडलीय टास्क फोर्स की बैठक में विद्यालयों का सघन निरीक्षण कराये जाने का निर्देश दिया। कहा कि विद्यालय में जो फर्जी अध्यापक हैं उनके खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज कराकर उनसे रिकवरी कराई जाए तथा उन्हें अरेस्ट भी किया जाए।

मण्डलीय बैठक करते मण्डलायुक्त

उन्होंने कहा कि अध्यापकों की नियमित उपस्थिति हो, क्योंकि वर्तमान में कोरोना के कारण विद्यालय में बच्चे नहीं आ रहे हैं। अतः ऐसे समय में विद्यालय के समस्त अवशेष कार्यों को विद्यालय खुलने से पहले पूर्ण कराने का निर्देश दिया। उन्होंने निःशुल्क यूनिफार्म तथा पाठ्य-पुस्तकों के वितरण की अंतिम समय सीमा निर्धारित कर समय से पुस्तकों का वितरण कराने को कहा। मण्डलायुक्त ने अच्छा कार्य करने वाले अध्यापकों को पुरस्कृत करने के लिए कहा है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि अध्यापकों की होने वाली मीटिंग में स्वयं भी प्रतिभाग करें। साथ ही एडी बेसिक को निर्देशित किया कि एक मंडल स्तरीय टास्क फोर्स बनवाकर विद्यालयों में कराए गए कार्यों की जांच कराएं। सभी विद्यालयों में अच्छे पुस्तकालय की व्यवस्था अवश्य हो। ऑनलाइन टीचिंग को बढ़ावा दिया जाए, बच्चों को ज्यादा से ज्यादा ऑनलाइन टीचिंग करवाई जाए।

मण्डलायुक्त ने कहा कि विद्यालय में जो फर्जी अध्यापक हैं, उनके खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज कराई जाए और उनसे रिकवरी कराई जाए तथा उन्हें अरेस्ट भी किया जाए। सभी शिक्षक दीक्षा ऐप का प्रयोग करें। कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों में प्रवेश का कार्य शत-प्रतिशत पूर्ण किया जाए। विद्यालय ना जाने वाले अध्यापको के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाए। बैठक में अपर निदेशक स्वास्थ्य, संभागीय खाद्य विपणन अधिकारी, उप निदेशक पंचायती राज, उप मुख्य परिवीक्षा अधिकारी, प्राचार्य जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान प्रयागराज, उपनिदेशक दिव्यांगजन सशक्तिकरण एवं जनपद प्रयागराज, कौशांबी, फतेहपुर तथा प्रतापगढ़ के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों के साथ-साथ मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक) प्रयागराज मंडल रमेश कुमार तिवारी ने प्रतिभाग किया।

सभी सम्बंधित विभाग समन्वय बनाकर जागरूकता अभियान चलाये : मण्डलायुक्त

प्रयागराज। मण्डलायुक्त आर0 रमेश कुमार ने गुरूवार को विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान तथा संचारी रोगों एवं दिमागी बुखार पर प्रभावी नियंत्रण एवं विभागों द्वारा की जाने वाली कार्यवाही के संदर्भ में कहा कि मण्डल के सभी जनपदों में आज से पूरे अक्टूबर माह तक संचारी रोग नियंत्रण अभियान चलाया जायेगा।

उन्होंने कहा कि इस कार्य में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ ही नगर विकास, पंचायतीराज, पशुपालन, चिकित्सा शिक्षा, बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार, शिक्षा, दिव्यांगजन सशक्तीकरण, कृषि एवं सिंचाई विभाग मिलकर काम करेंगे। सभी विभागों के माध्यम से जनसमुदाय में जनजागरूकता कार्यक्रम साथ ही एक से 15 अक्टूबर तक दस्तक अभियान चलाया जायेगा। जिसमें आशा कार्यकताओं की ड्यूटी लगाकर व्यापक स्तर प्रचार-प्रसार कराया जाये। इसके साथ ही बुखार से ग्रस्त रोगियों की सूचना ब्लाक मुख्यालय को देगी। सम्बंधित विभागों द्वारा ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में नालियों और जमें हुए पानी में एंटी लावा का छिड़काव और फागिंग करायी जाये ताकि मच्छरों को पनपने से रोका जा सके। मण्डलायुक्त ने कहा कि कोरोना के चलते लोग स्वयं साफ-सफाई का ध्यान दे रहे है, इससे संचारी रोगों के फैलने का खतरा कम होगा। मण्डलायुक्त ने पशुपालन विभाग द्वारा सूकर पालन और पशुपालन स्थलों पर विशेष रूप से कीटनाशकों का छिड़काव करने के निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिया। इन रोगों के रोकथाम हेतु सभी विभागों के बीच आपस में समन्वय स्थापित करते हुए एक साथ कार्रवाई करना सुनिश्चित करें। साथ ही जनपद तथा ब्लाक स्तर पर समन्वय समितियों का गठन कर नियमित अंतराल पर विभिन्न विभागों द्वारा किए गए कार्य तथा जनपद में रोग की स्थिति की समीक्षा हेतु इन समितियों की बैठक अवश्य आयोजित की जाये। उन्होंने कहा कि संचारी रोगों तथा दिमागी बुखार पर सफलतापूर्वक नियंत्रण पाने के लिए विभागों के मध्य समन्वय होना आवश्यक है।

राहुल गांधी प्रियंका को गिरफ्तार होते ही कांग्रेसी बैठ गए धरने पर

धरने पर बैठे कांग्रेसी कार्यकर्ता

प्रयागराज। हाथरस मैं बिटिया के साथ हुई बलात्कार के मामले में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी हाथरस के लिए रवाना हुए जैसे ही यूपी की सीमा में प्रवेश किए पुलिस ने उन्हें बल प्रयोग करते हुए रोक लिया। जैसे ही राहुल प्रियंका के गिरफ्तार होने की सूचना कांग्रेसी कार्यकताओं को मिली तो गंगा पार जिला अध्यक्ष रामकृष्ण सिंह पटेल के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता बालसन चौराहे पर धरना पर बैठ गए। कांग्रेसी कार्यकताओं को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। गंगा पार जिला अध्यक्ष रामकृष्ण सिंह पटेल ने बताया कि बलात्कार पीड़िता के घर परिवार को सांत्वना देने के लिए परिजनों से मिलने राहुल गांधी और प्रियंका गांधी जी के साथ उत्तर प्रदेश कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू मुझे जा रहे थे पुलिस ने उनको बलपूर्वक गिरफ्तार किया है इसको लेकर हम सभी कांग्रेसी भाजपा सरकार की इस कार्यवाही का घोर विरोध करते हैं। जब तक से इन नेताओं को छोड़ा नहीं जाएगा तब तक से हम लोग का प्रदर्शन जारी रहेगा। प्रदर्शन चल ही रहा था कि कांग्रेस पार्टी के जिलाध्यक्ष रामकिशुन पटेल सहित कार्यकताओं नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया है साथ ही एनएसयूआई के पदाधिकारियों को भी जबरन गिरफ्तार पुलिस लाइन ले जाया गया। हालांकि नोएडा में गिरफ्तार राहुल गांधी प्रियंका गांधी प्रदेश अध्यक्ष लल्लू जी अप पुलिस ने छोड़ दिया है। खबर लिखे जाने तक प्रयागराज पुलिस कांग्रेश जिला अध्यक्ष गंगा पार रामकिशन पटेल सहित कार्यकताओं को पुलिस लाइन में बैठ आई हुई थी।

उमरे ने माह सितंबर 2020 में माल ढुलाई के क्षेत्र में दर्ज की नई उपलब्धि

संरक्षा और कोविड -19 से बचाव को ध्यान में रखते हुये उत्तर मध्य रेलवे पर यात्री परिचालन में हो रही निरंतर वृद्धि

प्रयागराज। कोविड -19 स्थिति के बावजूद, उत्तर मध्य रेलवे ने सितंबर 2020 में माल ढुलाई में नई ऊंचाइयों को दर्ज किया है। पिछले 04 महीनों में सकारात्मक लोडिंग के ट्रेंड को जारी रखते हुए, उत्तर मध्य रेलवे ने सितंबर - 20 में 1.32 मिलियन टन माल लोड किया है जो पिछले साल सितंबर में 1.28 मिलियन टन की लोडिंग से 40000 टन अधिक है। उत्तर मध्य रेलवे मुख्य रूप से पासिंग थ्रू रेलवे रहा है, अतः ट्रेनों की गतिशीलता माल परिवहन में सबसे महत्वपूर्ण प्रदर्शन सूचकांक है। एक बड़ी उपलब्धि में, उत्तर मध्य रेलवे के आगरा और झांसी मण्डल में पहली बार मालगाड़ियों की मासिक औसत गति सितंबर 2020 में 50 किलोमीटर प्रति घंटे से अधिक रही है। इस वर्ष, उत्तर मध्य रेलवे ने पिछले वर्ष की तुलना में 82.3% के सुधार के साथ माल गाड़ियों की 44.73 किमी प्रति घंटे की औसत गति प्राप्त करने के साथ साथ 50 किलोमीटर प्रति घंटे की औसत गति के लक्ष्य की ओर निरंतर अग्रसर है। माल ढुलाई में सुधार के साथ, उत्तर मध्य रेलवे ने सितंबर 2020 तक रु 766.05 करोड़ रुपये का मालभाड़ा राजस्व अर्जित किया है। जो पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि की ओरिजिनेटिंग माल ढुलाई राजस्व रुपये 693.01 करोड़ की तुलना में रु 73.04 करोड़ अधिक है। माल परिवहन क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के अतिरिक्त, उत्तर मध्य रेलवे में संरक्षित ट्रेन संचालन और कोविड -19 से बचाव पर ध्यान केंद्रित करते हुये यात्री सेवाओं में भी धीरे-धीरे वृद्धि की जा रही है। दिनांक 30.09.20 को अतिरिक्त विशेष ट्रेनों के संचालन की घोषणा के साथ; रेलयात्रियों की यात्रा की जरूरी आवश्यकता को पूरा करने के लिए उत्तर मध्य रेलवे के विभिन्न स्टेशनों से कुल 109 जोड़ी स्पेशल ट्रेनें जिनमें 16 जोड़ी प्रारम्भिक ट्रेनें शामिल हैं का निम्नानुसार संचालन किया जा रहा है।

12 मई 2020 से 13 जोड़ी एसी विशेष ट्रेनों का संचालन प्रारम्भ।, 1 जून 2020 से 50 जोड़ी विशेष ट्रेनों का संचालन प्रारम्भ (02 जोड़ी प्रारम्भिक ट्रेनों सहित)।, 12 सितम्बर 2020 से 18 जोड़ी विशेष ट्रेनों का संचालन प्रारम्भ (06 जोड़ी प्रारम्भिक ट्रेनों सहित)।, दिनांक 17-25 सितम्बर के मध्य 04 जोड़ी विशेष ट्रेनों का संचालन।, 21 सितम्बर 2020 से 13 जोड़ी क्लोन ट्रेनों का संचालन।, 28 सितम्बर से 02 अक्टूबर के मध्य 03 जोड़ी ट्रेनों का संचालन किया जायेगा।, 02 अक्टूबर से 09 अक्टूबर के मध्य 08 जोड़ी ट्रेनों का संचालन किया जायेगा। ट्रैक, रोलिंग स्टॉक, सिग्नलिंग और अन्य महत्वपूर्ण संरक्षा उपकरणों के रखरखाव कार्य को समय पर पूरा करना संरक्षित और निर्बाध ट्रेन संचालन को सुनिश्चित कर रहा है। कोविड -19 से बचाव के लिए, पूरे उत्तर मध्य रेलवे में सैनिटाइजेशन, सोशल डिस्टैंसिंग, जन जागरूकता आदि के प्रयास तेज किए जा रहे हैं।

कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने की मनीषा के लिए न्याय की मांग

हाथरस की घटना पर आक्रोश व्यक्त करते कांग्रेसी

फूलपुर। आज प्रदेश में बच्चियों को लेकर परिजनों में असुरक्षा की भावना पैदा हो गई है। आए दिन बेटियों के साथ हो रहे अमानवीय ब्यवहार से हर कोई आहत हैं। वहीं सरकार द्वारा दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई न करने से लोगों में सरकार के प्रति आक्रोश भी बढ़ा है। यह बातें गुरूवार को हाथरस की बेटी मनीषा वाल्मीकि के साथ हुए जघन्य अपराध की निंदा करते हुए कांग्रेस के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद ने कही। परिजनों के लिए आर्थिक मदद की मांग करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार हर परिस्थिति में बेटियों के साथ है स्थिति कुछ भी हो पर महिलाओं के साथ होने वाले अत्याचार को कांग्रेसी बर्दास्त नहीं करेंगे। फूलपुर में एकत्रित कांग्रेसी कार्यकताओं के बीच बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित अशफाक अहमद ने कांग्रेस सरकार की उपलब्धियों को गिनाते हुए कांग्रेस की पुनः वापसी की अपील की। कांग्रेसी नेता देवराज उपाध्याय ने कहा कि हाथरस में दलित किशोरी मनीषा बाल्मीकि के साथ हुए बलात्कार व निर्मम हत्या के लिए शासन- प्रशासन पूर्णतः जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि यदि शासन द्वारा मनीषा के परिजनों को सहायता राशि प्रदान करने के साथ ही आरोपियों को अविलंब सजा नहीं दी जाती है तो कांग्रेस सड़क पर उतर कर आंदोलन करने के लिए बाध्य होगी। मौके पर भोलानाथ तिवारी, दिलीप कुमार द्विवेदी, अशोक यादव, कृष्णानंद, सूर्यकांत द्विवेदी, अश्वनी श्रीवास्तव, सद्दाम हुसैन, मोहम्मद इकबाल, सुभाष चंद्र विश्वकर्मा, इस्तियाक अहमद सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

उमरे मुख्यालय पर पार्सल ग्राहकों के साथ बैठक आयोजित

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय द्वारा पार्सल लदान में वृद्धि हेतु प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक महेंद्र नाथ ओझा की अध्यक्षता में पार्सल ग्राहकों के साथ गुरूवार को विडियो कांफ्रेंस के माध्यम से बैठक आयोजित की गई। जिसमें मुख्य वाणिज्य प्रबंधक-भाड़ा विपणन एवं तीनों मण्डल के वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक उपस्थित थे। बैठक में कानपुर, आगरा, प्रयागराज आदि के पार्सल व्यापारी सम्मिलित हुए। इस दौरान रेल से पार्सल लदान एवं आय में वृद्धि हेतु पार्सल व्यापारियों से सुझाव माँगा गया। साथ ही रेलवे से अपेक्षित सहयोग के बारे में चर्चा की गयी। प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबन्धक ने रेलवे बोर्ड द्वारा पार्सल की अग्रिम बुकिंग की सुविधा के सम्बंध में व्यापारियों को अवगत कराया एवं यह भी बताया कि दुर्गा पूजा एवं छठ पूजा के लिए जो विशेष ट्रेन चलायी जा रही है। इच्छुक पार्टी उस ट्रेन में भी लदान हेतु कम अवधि के लिए एसएलआर-वीपी को लीज पर ले सकते हैं।

ज्ञात हो कि रेलवे बोर्ड ने पार्सल यातायात को बढ़ाने एवं व्यापारियों को सुविधा प्रदान करने हेतु पार्सल की एडवांस बुकिंग 120 दिन पूर्व तक प्रदान की है। जिसके तहत पार्टी द्वारा एडवांस बुकिंग के समय कुल भाड़े का 10 प्रतिशत जमा कर दिया जाएगा एवं शेष 90 प्रतिशत भाड़े का भुगतान करने का आश्वासन गाड़ी के निर्धारित प्रस्थान समय से 72 घंटे पूर्व पार्सल कार्यालय को कर दिया जाना चाहिए। अन्यथा पार्सल की एडवांस बुकिंग रद्द कर दी जाएगी एवं जमा किया गया एडवांस भाड़ा जब्त कर लिया जाएगा। यदि किसी कारण गाड़ी के निर्धारित प्रस्थान समय से 72 घंटे पूर्व पार्टी द्वारा एडवांस बुकिंग रद्द कर दी जाती है तो उनके द्वारा जमा किए गया एडवांस भाड़ा पार्टी को वापस कर दिया जाएगा। यदि उपरोक्त समय सीमा (72 घंटे) के बाद पार्टी द्वारा एडवांस बुकिंग रद्द कर दी जाती है।

राष्ट्रीय सनातन सेना के प्रकोष्ठों की बैठक में कार्यक्रम की रूपरेखा तय

प्रयागराज। राष्ट्रीय सनातन सेना के विभिन्न प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों की बैठक गुरूवार को झलवा प्रयागराज स्थित एक विद्यालय में आयोजित हुई। जिसमें सनातन सेना के एक बड़े कार्यक्रम की रक्षाराखी सनातन सेना के विभिन्न प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों को लेकर एक बड़े कार्यक्रम की रूपरेखा तय की गई। इसके अलावा समसामयिक समस्याओं पर कोरोना काल में परेशान और वंचित लोगों की व्यक्तिगत स्तर पर और बेहतर मदद कैसे की जाए। इस पर चर्चा की गई। साथ ही साथ सामाजिक सरोकारों एवं सामाजिक समस्याओं पर चर्चा की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सनातन सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज कुमार दुबे रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुभाष मिश्रा ने एवं संचालन राष्ट्रीय सनातन सेना के राष्ट्रीय सचिव राजेंद्र कुमार त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में अधिवक्तागण, शिक्षाविद, व्यापारी वर्ग सामाजिक कार्यकर्ता, जन प्रतिनिधियों ने अपने विचार रखे। बैठक में मुख्य रूप से अमिताभ दुबे, अतुल सिंह चैहान, विष्णु पांडे, विष्णु दत्त मिश्रा, गौरव द्विवेदी, राम लाला ओझा, डॉ. प्रभु शंकर शुक्ला, रेवती रमण त्रिपाठी, आकाश मिश्रा, अंकित द्विवेदी, राजेश आदि रहे।

बैठक में प्रयाग अभाविप के पदाधिकारियों की घोषणा

प्रयागराज। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद काशी प्रांत की प्रांत कार्यसमिति की बैठक में प्रान्त अध्यक्ष डॉ. अखिलेश पांडेय ने प्रयागराज के पदाधिकारियों की घोषणा की। जिसमें प्रयाग विभाग संगठन मंत्री रजनीश, प्रयाग महानगर अध्यक्ष डॉ.रमेश सिंह और प्रयाग महानगर मंत्री अनुपम त्रिपाठी को नियुक्त किया गया है।

उक्त जानकारी प्रयाग महानगर अध्यक्ष डॉ. रमेश सिंह ने देते हुए बताया कि अभाविप विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है और परिषद शिक्षा क्षेत्र में कार्य करते हुए समाज व राष्ट्र के प्रत्येक महत्वपूर्ण विषयों को लेकर विद्यार्थियों को राष्ट्रीयता के भाव से जोड़ते हुए उन्हें समाज के प्रति संवेदनशील बनाकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक लक्ष्य को पूरा करने के संकल्प को लेकर निरंतर अपना विस्तार कर रहा है। जिसके तहत काशी में हुई अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद काशी प्रांत की दो दिवसीय प्रांत कार्यसमिति बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चैहान, पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संगठन मंत्री रमेश गाड़िया, प्रांत संगठन मंत्री विजय प्रताप, प्रांत अध्यक्ष डॉ. अखिलेश पांडेय, प्रांत मंत्री सुधांशु शेखर सिंह व प्रान्त के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उन्होंने बताया कि बैठक में प्रान्त अध्यक्ष डॉ.अखिलेश पांडेय ने प्रयागराज के लिए कुछ महत्वपूर्ण घोषणाएं की। प्रयाग विभाग संगठन मंत्री के रूप में रजनीश, प्रयाग महानगर अध्यक्ष के रूप में पुनः डॉ. रमेश सिंह और प्रयाग महानगर मंत्री के रूप में पुनः अनुपम त्रिपाठी के नाम की घोषणा हुई। महानगर अध्यक्ष श्यामा प्रसाद मुखर्जी डिग्री कॉलेज में हिन्दी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं और महानगर मंत्री अनुपम त्रिपाठी प्रोफेसर राजेंद्र सिंह रज्जू भैया राज्य विश्वविद्यालय से विधि अंतिम वर्ष के छात्र हैं। पिछले तीन वर्षों से एबीवीपी प्रयाग महानगर के महानगर मंत्री के दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

भाजपा सरकार में राक्षसीपन और वहशीपन उफान पर : नरेंद्र सिंह

प्रयागराज। आम आदमी हताश और निराश है। बहन बेटियां मछली की तरह तड़पा-तड़पा कर दरिन्दगी का शिकार हो रही हैं। भाजपा सरकार मे राक्षसीपन और वहशीपन उफान पर है यह बात सपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व प्रदेश सचिव नरेन्द्र अखिलेश यादव द्वारा जारी डिजिटल पत्रक को छपवा कर मेजा क्षेत्र के सभी वर्गों मे वितरण करते हुए कहा है। महीनों से लगातार पत्रक वितरण के क्रम मे गुरूवार को नरेन्द्र सिंह ने मेजा क्षेत्र के कई किसानों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, गरीबों तथा युवाओं से मिलकर प्रदेश में पुनः अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए अगस्त क्रांति की समाजवादी दिशा पत्रक सौंपकर तथा लाल टोपी पहना कर सपा के समर्थन की अपील की ' गुरुवार को अभियान के तहत सपा नेता ने मेजा क्षेत्र के हनुमानगढ़, तिगजा, लक्षनपुर, सिंहपुर, कोना सहित विभिन्न गाँवों मे भ्रमण करके पत्रक बांट कर प्रदेश की खुशहाली के लिए 2022 मे समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने के लिए सहयोग की अपील की। उन्होंने सर्व कल्याण के लिए समाजवाद को ही सही रास्ता सुझाया है। इस मौके पर सर्व श्री अवधविहारी यादव, भोला पाल, राम सागर यादव, हिमांशु कुमार सिंह, भूपेन्द्र सिंह मुन्ना, शिव बाबा निषाद प्रधान, अशर्फी पाल, रंग लाल निषाद प्रधान कोना, पन्नालाल मिश्र, योगेन्द्र कुमार मिश्र, अखिलेश कुमार मिश्र, पारस निषाद, शैलेन्द्र सिंह शीलू , संदीप सिंह, व्यन्कट रमण सिंह, रूद्र प्रताप सिंह (मुखिया), कृष्ण कुमार पाण्डेय, नितिन सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, अंकुश सिंह, अशोक सिंह, प्रदीप प्रजापति, अविनाश सिंह पटेल, राजाराम पटेल, आशिक राम पटेल, अमर जीत पाल, रामकरन पाल, मुन्ना पटेल, रमाशंकर गुप्ता, राम सजीवन यादव, राम किशोर यादव, राजू यादव, अनिल यादव, विनय यादव, दीपक यादव, विपुल यादव, परमसुख आदिवासी, अनिल पाल, विनय कुमार विश्वकर्मा, महादेव प्रसाद, विजय शंकर निषाद, राम जतन निषाद, अमर चंद्र निषाद, राधे श्याम, शोभ नाथ आदि रहे।

पत्रक के साथ सपा नेता नरेन्द्र सिंह व कार्यकर्ता

अखण्ड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम कियायोग आश्रम एवं अनुसंधान सस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम

पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं0: UPHIN2001/9025

क्रियायोग सन्देश

प्रयागराज शुक्रवार, 2 अक्टूबर, 2020

वर्धा में महात्मा गांधी के साथ

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी

परमहंस योगानंद जी वारदा में

परमहंस योगानंद द्वारा योगी की आत्मकथा के अंश – अध्याय ४४

...वर्धा में वह सुखद समय बिताए बरसों बीत गए हैं। जल, स्थल, आकाश में युद्धरत विश्व में अंधकार छा गया है। महान् नेताओं में अकेले गांधी जी ने ही सशस्त्र शक्ति के स्थान पर व्यवहारिक अहिंसा का विकल्प प्रस्तुत किया है। शिकायतों को और अन्यायों को दूर करने के लिए महात्मा जी ने अहिंसा के उपायों का अवलंब किया है और बार-बार उन उपायों ने अपनी प्रभाव कारिता सिद्ध की है। गांधीजी अपने सिद्धांत को इन शब्दों में प्रकट करते हैं :

मैंने देखा है कि विध्वंस और विनाश के बीच भी जीवन चलता रहता है । इसलिए विनाश से भी बड़ा कोई नियम अवश्य है। केवल उसी नियम के अंतर्गत किसी सुव्यवस्थित समाज का अस्तित्व संभव हो सकता है और जीवन जीने योग्य बन सकता है।

यदि वही जीवन का नियम है, तो हमें दैनिक जीवन में उसका पालन करना चाहिये। जहाँ भी युद्ध हो, जहाँ भी किसी विरोधी से हमारा सामना हो, हमें प्रेम से ही विजय प्राप्त करनी चाहिये। मैंने देखा है कि प्रेम के अचूक नियम ने मेरे जीवन में ऐसे समाधान दिए हैं जो अविनाश के नियम ने कभी नहीं दिये।

जितने बड़े पैमाने पर इस नियम के कार्यरत तथा का प्रत्यक्ष उदाहरण देखना संभव हो सकता है, उतने बड़े पैमाने पर हमने यह उदाहरण भारत में प्रत्यक्ष देखा है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि भारत के ३६ करोड़ लोगों के मन में अहिंसा ने घर बना लिया है , परंतु मैं यह दावा अवश्य करता हूँ कि अत्यंत अल्प समय में यह अन्य किसी भी सिद्धांत की अपेक्षा कहीं अधिक गहराई तक उतर गयी है।

अहिंसा की मानसिक अवस्था प्राप्त करने के लिये काफी कष्ट साधना की आवश्यकता होती है उसके लिये सैनिक के जीवन की भाँती कठोर अनुशासन बद्ध जीवन की आवश्यकता होती है। इसकी पूर्ण अवस्था तभी आती है जब मन, शरीर एवं वाणी में पूर्ण समन्वय स्थापित हो जाय। यदि हम सत्य और अहिंसा के नियम को अपने जीवन का नियम बनाने की ठान लें, प्रत्येक समस्या अपना समाधान स्वयं स्प्ब प्रस्तुत कर देगी।

विश्व का राजनैतिक घटनाक्रम इस सत्य की ओर कटु संकेत कर रहा है की आध्यात्मिक दृष्टि के बिना मनुष्य का विनाश सुनिशिचत है। यदि धर्म में नहीं, तो विज्ञान में मानव जाति के मन में असुरक्षा और सब भौतिक पदार्थों को निस्सारता की अस्फुट-सी भावना जगा दी है । अब सचमुच, मनुष्य अपने स्रोत और उद्गम, अपने भीतर स्थित परमात्मा के पास न जाएँ, तो और कहाँ जाएँ ?

WITH MAHATMA GANDHI IN WARDHA...

Excerpt from Autobiography of a Yogi by Paramahansa Yogananda

Chapter 44

... Years have rolled by since the Wardha idyl; the earth, oceans, and skies have darkened with a world at war. Alone among great leaders, Gandhi has offered a practical non-violent alternative to armed might. To redress grievances and remove injustices, the Mahatma has employed non-violent means which again and again have proved their effectiveness. He states his doctrine in these words:

I have found that life persists in the midst of destruction. Therefore, there must be a higher law than that of destruction. Only under that law would well-ordered society be intelligible and life worth living.

If that is the law of life we must work it out in daily existence. Wherever there are wars, wherever we are confronted with an opponent, conquer by love. I have found that the certain law of love has answered in my own life as

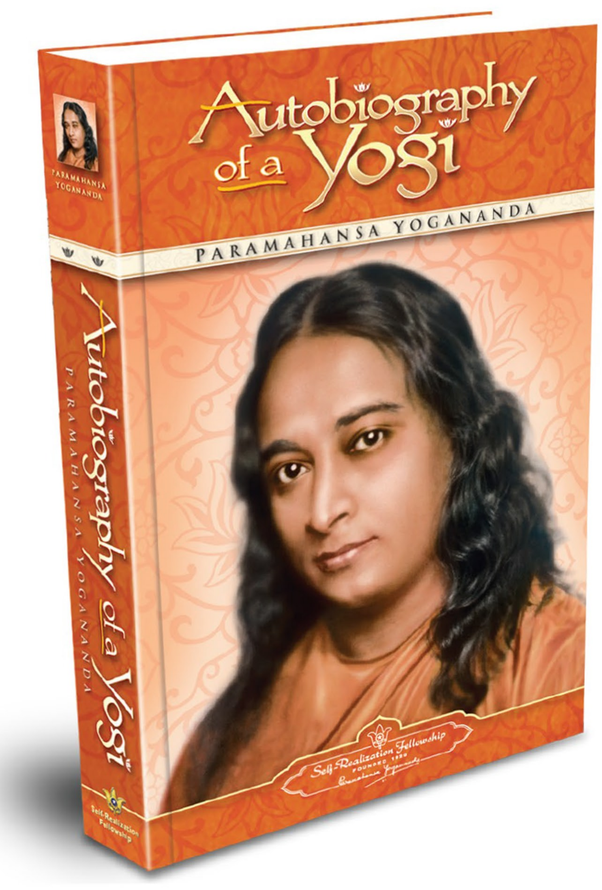

the law of destruction has never done.

In India we have had an ocular demonstration of the operation of this law on the widest scale possible. I don't claim that nonviolence has penetrated the 360,000,000 people in India, but I do claim it has penetrated deeper than any other doctrine in an incredibly short time.

It takes a fairly strenuous course of training to attain a mental state of nonviolence. It is a disciplined life, like the life of a soldier. The perfect state is reached only when the mind, body, and speech are in proper coordination. Every problem would lend itself to solution if we determined to make the law of truth and non-violence the law of life.

Just as a scientist will work wonders out of various applications of the laws of nature, a man who applies the laws of love with scientific precision can work greater wonders. Non-violence is infinitely more wonderful and subtle than forces of nature like, for instance, electricity. The law of love is a far greater science than any modern science.